स्वयं सहायता समूह बना शौचालय निर्माण में सहयोगी

यह कहना शायद गलत नहीं होगा कि स्वच्छ भारत अभियान को सफल बनाने में महिलाओं की भूमिका निर्णायक है। वेस्वच्छ जीवन शैली को अपनाने के लिए मेहनत से की गई बचत सेशौचालय बनवा रही हैं। बल्कि ससुराल मेंशौचालय बनवानेकी मांग भीकर रही है। ऐसा ही एक प्रयास सिहोर जिले केनसुरूल्लागंजके सेमलपानी ग्राम पंचायत की मीना बाई ने किया हैजो प्रेरणादायक उदाहरण है। वे महिलाओं की एक स्वयं सहायता समूह की सदस्य हैं।

मीना बाई के परिवार में सात सदस्य हैं, जिसमें 18 साल की एक बेटी और उनकी एक ननद भी शामिल है। गांव में आयोजित जागरुकता कार्यक्रम के बाद ही वे अपने घर में शौचालय बनाने के लिए इक्छुक थीं, पर अपनी इस इच्छा को पूरा करने के लिए आर्थिक तंगी केकारण तत्काल कोई कदम नहीं उठा सकीं।

मीना गाँव में बने एक स्वयं सहायता समूह में सदस्य के रूप में शामिल हुई, मीना की इच्छा को पूरा करने हेतु स्वयं सहायता समूहएक सहारा के रूप में सामने आया। उसने दस हजार रुपये उधार लिए। इस रकम में उन्होंने अपनी बचत में से चार से पांच हजार रुपये और मिलाए। लेकिन, सात लोगों के बड़े परिवार के साथ यह मुश्किल काम था। मीना बताती हैं, "हमने रसोई के बजट में से बचत किया। कुछ दिनों तक एक ही व्यंजन बना, तेल का प्रयोग कम किया, खाने से चटनी खत्म कर दी।"

मीना का यह प्रयास व्यर्थ नहीं गया। कई सालों तक वह पेट के दर्द से परेशान रहीं और अब घर में शौचालय होने से उन्हें काफी आराम है। मुस्कुराते हुए मीना बाई कहती हैं, "मैंने तकरीबन 20 हजार रुपये दवाई और डाक्टर के शुल्क पर खर्च कर दिए। लेकिन अब मुझे काफी आराम है।" समय पर निवृत न हो पाने की वजहसे उन्हें स्वास्थ्य की समस्या पैदा हो गई।

हालांकि वह अपनी बेटी के लिए चिंतित है। क्योंकि उसके ससुराल मेंशौचालय नहीं है। मीना का बेटा जितेन मालवीय, जो एक प्रशिक्षित राजमिस्तरी है, अपने बहनोई से कई बार शौचालय बनवाने हेतु निवेदन कर चुका है। निराश जितेन इस बात से चिंतित हैं कि उनकी बहन को शौचालय की सुविधा नहीं है, जो उसके परिवार को प्राप्त है। वह कहता है, "चारलाख का एक घर बनाने के लिए तो उनके पास रकम है, लेकिन एक शौचालय बनाने से इंकार करते हैं।"

****

स्त्रोत : एम पी वॉश, वाटर एड